CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

विद्यालय स्तर पर सह शैक्षिक क्रियाएं

सुमन
पीएचडी शोधार्थी
डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय
प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष
महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर

First draft received: 05.09.2024, Reviewed: 09.09.2024, Final proof received: 15.09.2024, Accepted: 29.09.2024

सार संक्षेप

ऐसी गतिविधिया जो शिक्षण के साथ–साथ चलती है। वह सह– शैक्षिक गतिविधि कहलाती है। विभिन्न विषयों के शिक्षण के साथ–साथ बच्चों के सह–शैक्षिक क्रियाओं को प्रोत्साहित करना भी शिक्षण कार्य का ही भाग है। बच्चों मे कई तरह की सृजनात्मक क्षमताएँ होती है। जो अकसर किताबी ज्ञान तक ही रह जाती है। लेकिन वही हम लोग शैक्षिक गतिविधियों के साथ–साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं पर जोर दे तो बच्चों के जीवन में जिज्ञासा, उत्साह तथा उमंग का बीज बो सकते है। कहा गया है कि शैक्षिक क्रियाओं के साथ–साथ सह–शैक्षिक क्रियाओं के द्वारा बच्चो का सर्वांगीण विकास संभव है। सह शैक्षिक क्रियाओ के अन्तर्गत संगीत नृत्य, खेलकुद हस्तकला, पाककला, खिलौने बनाना इत्यादि गतिविधि आती है।

प्रस्तावना

सह–शैक्षिक गतिविधियों के द्वारा विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में सहायता करना है। ताकि वह जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के लिए विद्यालय में समुचित प्रशिक्षण प्राप्त कर ले। सह–पाठ्यक्रम गतिविधियां बच्चों में व्यक्तित्व के सामंजस्यपूर्ण विकास को सुनिश्चित करती है। औपचारिक शिक्षण अनुभवो का एक विस्तार है और शैक्षणिक गतिविधियो के पूरक में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वे रुचि और भाषा कौशल, संचारी कौशल,हिस्टारिक कौशल और बच्चे के कलात्मक कौशल को बेहतर बनाने में मदद करता है।

बच्चो के सह शैक्षिक विकास का अध्ययन

ऐसी गतिविधिया जो शिक्षण के साथ–साथ चलती है। वह सह– शैक्षिक गतिविधि कहलाती है। विभिन्न विषयों के शिक्षण के साथ–साथ बच्चों के सह–शैक्षिक क्रियाओं को प्रोत्साहित करना भी शिक्षण कार्य का ही भाग है। बच्चों मे कई तरह की सृजनात्मक क्षमताएँ होती है। जो अकसर किताबी ज्ञान तक ही रह जाती है। लेकिन वही हम लोग शैक्षिक गतिविधियों के साथ–साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं पर जोर दे तो बच्चों के जीवन में जिज्ञासा, उत्साह तथा उमंग का बीज बो सकते है। कहा गया है कि शैक्षिक क्रियाओं के साथ–साथ सह–शैक्षिक क्रियाओं के द्वारा बच्चो का सर्वांगीण विकास संभव है। सह शैक्षिक क्रियाओ के अन्तर्गत संगीत नृत्य, खेलकुद हस्तकला, पाककला, खिलौने बनाना इत्यादि गतिविधि आती है।

सह–शैक्षिक गतिविधियों के प्रकार

- इंडोर सह–शैक्षिक गतिविधियां
- आउटडोर सह–शैक्षिक गतिविधियां

इंडोर सह–शैक्षिक गतिविधियां

- रंगोली
- चित्रकला
- संगीत
- नाटक
- सजावट
- सिलाई
- प्रासंगिक चिकित्सा
- कला एक शिल्प
- बुक बाइण्डिग

आउटडोर सह–शैक्षिक गतिविधियां

- बागवानी
- योग
- खेती
- साइकिल चलाना
- सामुहिक परेड
- फुटबॉल
- कब्बडी

स्कूल पाठ्यक्रम में शामिल कुछ सह शैक्षिक क्षेत्र इस प्रकार है–

- सोच कौशल– इस गतिविधि के अंतर्गत विभिन्न कार्य हैं – जिनमे आत्मजागरुकता समस्या समाधान, निर्णय लेना,आलोचनात्मक एवं रचनात्मक सोच शामिल है।
- सामाजिक कौशल– पारस्परिक सम्बन्ध, सहानुभूति
- भावानात्मक कौशल– भावनाओ को प्रतिबंधित करने के साथ–साथ तनाव से निपटना भी शामिल है। सह शैक्षिक गतिविधियों में शामिल इन कौशलो से बच्चो को न केवल कक्षा और परीक्षाओ में बल्कि विभिन्न कौशलो में सहायक हैं। विद्यालय को शिक्षार्थियो का समुदाय कहा जाता है।

सह शैक्षिक क्रियाओं का महत्व

सह शैक्षिक गतिविधियों द्वारा बच्चों में सकारात्मक गुणों का विकास होता है।

- सह–शैक्षिक क्रियाओं के माध्यम से ही बच्चो के अन्तः निहित कौशलो की पहचान कर सकते है।

- इस प्रकार की गतिविधियों द्वारा बच्चों में समूह कार्य की क्षमता का विकास होता है।
- सह शैक्षिक क्रिआओ से विद्यार्थियों के निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है।
- योग करने से बच्ची से मानसिक शक्ति की अनुभूति प्रदान होती है।
- खेल के माध्यम से बच्चों में शारीरिक व मानसिक क्षमता संवृधि का विकास होता एवं बच्चे प्रसन्न महसूस करते है।
- बच्चों में नेतृत्व की भावना का विकास होता है।
- सह शैक्षिक क्रियाओं के द्वारा विद्यार्थी के जीवन से उदासीनता दूर होती है।

सह शैक्षिक विकास की योजना का क्रियान्वयन

- विद्यालयो में शिक्षको द्वारा एक जैसे सह–शैक्षिक पक्ष वाले बच्चों का समूह बनाया गया। साप्ताहिक एवं मासिक कार्यक्रमों का निरन्तर आयोजन।
- विद्यालय के समय–सारणी में सह शैक्षिक गतिविधियों को शामिल किया गया।
- चेतना सत्र में छोटे–छोटे क्विज प्रतियोगिता को शामिल किया।
- सरकारी विद्यालयों में हर शनिवार को No Bag day Activites कारवानी जानी लगी जिससे बच्चों में शैक्षिक क्रियाओं का विकास होता है।
- विद्यालय में इस प्रकार की गतिविधियों के क्रियान्वयन से बच्चो की असामान्य प्रतिभा सामने आती है।

पाठ्य सहगामी क्रियायें

विद्यालयों में आयोजित होने वाली पाठ्य सहगामी क्रियाएँ निम्नलिखित है।

- दैनिक सामुहिक सभा– विद्यालयों में सर्वप्रथम प्रार्थना सभा का आयोजन होता है। जो छात्र एवं अध्यापक दोनों के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। और प्रार्थना सभा के बाद दैनिक एक सभा का आयोजन होना चाहिए जिसमे नियमितता, अनुशासन और नैतिकता आदि से सम्बन्धित बाते भी बतायी जानी चाहिए।
- विषय सम्बन्धित समिति– विद्यालय पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत कुछ ऐसे विषय है जिस पर विशेष समिति का गठन किया जाता है। जैसे– विज्ञान कल्ब, कृषि समूदाय भाषा समिति आदि। इससे छात्रो मे स्वतंत्र चिन्तन एवं रुचि का विकास होता है।
- खेल कुद– बालको की खेल कूद के प्रति रुचि ज्यादा होती है। विद्यालयो में खेल–कुद का विशेष महत्व रहा है। खेल से बच्चो में मनोरंजन प्राप्त होता है। तथा बालको के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक गुणो की विकास होता है।
- विद्यालय पत्रिका प्रकाशन– विद्यालय में समय–समय पर मासिक, वार्षिक, त्रिमासिक आदि पत्रिकाओं की प्रकाशन होता है। जिससे बच्चो के उत्कृष्ठ लेखों का प्रकाशन होता है।
- शैक्षिक भ्रमण– विद्यालय द्वारा समय–समय पर बालको को शैक्षिक भ्रमण कराया जाता है। जो बालक के ज्ञान को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष एवं व्यवहारिक ज्ञान अपनाने की क्षमता विकसित होती है। यह बच्चों में प्रत्यक्ष ज्ञान करने का एक माध्यम है।
- प्रदर्शन– विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के कार्य कराये जाते हैं। नाटक, चित्रकला, संगीतकला एवं फोटोग्राफी आदि कुछ ऐसे कार्य है जो अभिरुचियों का प्रदर्शन कर सके। जिससे बालक को सही दिशा देने में सहायता की जाती हैं।
- वाद–विवाद– वाद–विवाद और भाषण प्रतियोगिता छात्रों के अभिव्यक्ति का सबसे महत्वपूर्ण साधन यह बालको में तर्क, चिन्तन एवं कल्पना शक्ति का विकास करती है। तथा छात्रो को अपने विचारों को व्यवस्थित रूप से प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करती है।

इस प्रकार विद्यालय क्षेत्र मे पाठ्यसहगामी क्रियाओ का गतिविधियों के आधार पर अध्ययन करवाया जाता है।

विद्यालय स्तर पर सह–शैक्षिक गतिविधियों को आयोजित करने से पूर्व निम्न बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है–

- सह–शैक्षिक क्रियाकलापों में बालिकाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना।
- सह–शैक्षिक गतिविधियां बच्चो के स्तर और उनकी आयु के अनुसार चयनित करना।
- सह–शैक्षिक गतिविधियो में विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को सहभागिता सुनिश्चित करना।
- बच्चे द्वारा स्वतंत्र रूप से सहशैक्षिक गतिविधियो का संचालन सुनिश्चित करना।
- सहशैक्षिक गतिविधियो हेतु समिति का गठन एवं प्रभावी संचालन सुनिश्चित करना।
- सह शैक्षिक गतिविधियों के क्रियान्वयन हेतु सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- विद्यालय में सह शैक्षिक गतिविधियो के सुचारु रुप से संचालन के दृष्टिगत उससे सम्बन्धित नियोजन प्रबन्धन एवं क्रियान्वयन की समझ विकसित करना आवश्यक है।
- सह शौक्षिक गतिविधियों की कार्ययोजना को तैयार करते हुए उसके उद्देश्य, लक्ष्य, प्रभाव समूह, स्वरूप, लागत,अवधि, फैलाव, स्थान, क्रियाविधि आदि का ढांचा तैयार करना

पाठ्य–सहगामी प्रवृत्तियों का महत्व

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने लिखा ''ये प्रवृत्तियॉ पाठ्यक्रम की अभिन्न अंग है। इसके उपर्युक्त संचालन के लिए काफी ध्यान देने की तथा दूर दृष्टि की आवश्यकता है। यदि ठीक प्रकार से संचालन किया जाये तो थे छात्रो में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण गुणो और अभिवृतियों" की विकास कर सकती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–66) ने पाठ्य एवं पाठ्येत्तर प्रवृत्तियों के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा कि विद्यालय के अन्दर हो अथवा बाहर पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग है।

पाठ्य सहगामी प्रकृतियों के सफल संचालन से छात्रो से विविध गुणों का विकास हो सकता है। –

- समन्वित व्यक्तित्व का विकास जैसे– हदय, हाथ, पैर, आँख मस्तिष्क का संतुलित विकास
- उत्प्रेरणा में सहायक।
- करके सिखने के सिद्धान्त का व्यवहार में प्रयोग।
- सिद्धान्त और व्यवहार की खाई को दूर करना।
- सृजनकारी अभिवृत्तियो का विकास।
- इन्द्रियों का प्रशिक्षण ।
- अच्छी आदतो का निर्माण।
- नेतृत्व के गुणों का विकास।
- अधिगम को सोद्धेश्य बनाने में मदद।
- समाज के निर्माण मे योग्य।
- जनतन्त्रीय गुणो विकास।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रधानाचार्य तथा शिक्षको की भूमिका

छात्र छात्राओं के कार्यक्रम को संगठित करने से पहले प्रधानाचार्य को अपने शिक्षक वर्ग की योग्यताओं एव क्षमताओ को जानना चाहिए। कार्यक्रम की सफलता व असफलता अधिकाशतः शिक्षक वर्ग के दृष्टिकोण एवं उत्साह पर निर्भर है। छात्र– शिक्षकों से सहायता व परामर्श ही प्राप्त नहीं करते वरन् वे उनसे प्रेरणा पाकर अपने सम्भाव्य गुणो विकास कर पाते है। अतः छात्र क्रियाओं के लिए प्रशासकीय संगठन का चार्ट प्रस्तुत किया जा रहा है। जिसमें प्रधानाध्यापक, शिक्षक तथा छात्र के सहयोग को स्पष्ट किया गया है।

प्रधानाचार्य

↓

पाठ्य सहगामी क्रियाओ का संचालन (शिक्षक वर्ग मे से)

↓

योजना समिति (इमसे शिक्षको तथा छात्र–दोनो के सदस्य)

↓

छात्र परिषद

↓

विभिन्न क्रियाओं के संगठन में (छात्रों के सदस्य)

इन विभिन्न क्रियाओं के संगठन से अधोलिखित अधिकारी होगें।

- परामर्शदाता (शिक्षक वर्ग में से)
- अधिकारी (छात्रों के निर्वाचित अधिकारी प्रधान/उपप्रधान मंत्री आदि)
- सदस्य (छात्रा में से)

इस प्रकार प्राधानाचार्य शिक्षको के साथ मिलकर सहगामी वार्षिक योजना तैयार करता है। विभिन्न प्रवृत्तियों के लिए निरीक्षण व मार्गदर्शन का दायित्व निभाता है। छात्रो को प्रोत्साहित करने के लिए पारितोषिक व प्रमाण–पत्रो के सम्बन्ध में निर्णय लेकर मुख्य दायित्व निभाता है।

निष्कर्ष

प्राथमिक विद्यालयों में बालक अपनी बाल्यावस्था में होता हैं। उसका शारीरिक और मानसिक विकास दोनों हो रहा होता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं बालक के सर्वांगीण विकास में सहायक होती हैं। पाठ्य सहगामी क्रियाओं से बालक की रुचि, गति एवं क्षमता का पता चलता है। और बालक के स्वतंत्र रुप से विकास का अवसर प्राप्त होता है। पाठ्य सहगामी क्रियाएं बालक के व्यवहारिक ज्ञान का आधार होती है। बालक को प्रत्यक्ष ज्ञान का अनुभव का अवसर प्राप्त होता है। वर्तमान समय में शिक्षा के मूलभूत लक्ष्य बालक का सर्वांगीण विकास एवं समाज का सभ्य नागरिक बनाने को पाठ्य सहगामी क्रियाओं से प्राप्त किया जा सकता है।

सन्दर्भ

- गुप्ता एस. पी. (2006) ''भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याए'', शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
- पाठक पी.डी. (2008) ''भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याए'' अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
- पाठक पी.डी. (2013) ''शिक्षा मनोविज्ञान'' अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
- सक्सेना, सरोज (2009) ''विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा'' साहित्य प्रकाशन आगरा।
- शर्मा आर.ए. (2007) ''सामाजिक विज्ञान शिक्षण'', आर. लाल बुक डिपो मेरठ।